प्रभात

छिपाएंगे नहीं, छापेंगे

facebook-Subharti Tv Twitter-Subharti Tv

www.subhartimedia.com लखनऊ, शुक्रवार, 05 जून 2020, मूल्य : 2.00, पृष्ठ : 12 उत्तर प्रदेश–उत्तराखंड से प्रकाशित एक सड़क पर दो देश कड़क -12

विश्व पर्यावरण दिवसः पर्यावरण परिवर्तन का जैव विविधता पर असर

लखनऊ। प्रभात

हम जानते हैं की पृथ्वी पर जीवन की विविधता और परिवर्तनशीलता है। जैव विविधता आम तौर पर आनुवंशिक, प्रजातियों और पारिस्थितिकी तंत्र के स्तर पर भिन्नता का एक अंश है। स्थलीय जैव विविधता आमतौर पर भूमध्य रेखा के पास अधिक होती है, जो गर्म जलवायु और उच्च प्राथमिक उत्पादकता का परिणाम है। जैव विविधता पृथ्वी पर समान रूप से वितरित नहीं की जाती है, और उष्णकटिबंधीय में सबसे समृद्धरूप में पाई जाती है। ये उष्णकटिबंधीय वन पारिस्थितिकी तंत्र, पृथ्वी की सतह के 10 प्रतिशत से कम को आक्षादित करते हैं, और जिस पर दुनिया की प्रजातियों में लगभग 90 प्रतिशत शामिल हैं। समुद्री जैव विविधता आमतौर पर पश्चिमी प्रशांत क्षेत्र में तटों पर सबसे अधिक होती है, जहां समुद्र की सतह का तापमान सबसे अधिक होता है, और सभी महासागरों में मध्य अक्षांशीय बैंड में। प्रजातियों की विविधता में अक्षांशीय ढाल हैं। जैव विविधता आम तौर

बी.आर. सिंह

पर हॉटस्पॉट में क्लस्टर करती है, और समय के माध्यम से बढ़ रही है, लेकिन भविष्य में धीमा होने की संभावना होगी। वरिष्ठ पर्यावरणविद एवं स्कूल आफ मैनेजमेंट साइंसेज (एसएमएस) के महानिदेशक प्रो. भरत राज सिंह ने बताया कि जैव विविधता को केवल जीनों, प्रजातियों या आवासों के कुल योग के रूप में परिभाषित नहीं किया जा सकता है, लेकिन उनके अंतरों की विविधता के उपाय के रूप में भी समझा जाना चाहिए। जीवविज्ञानी अक्सर जैव विविधता को

ष्एक क्षेत्र की जीन, प्रजातियों और पारिस्थितिक तंत्र की समग्रताष् के रूप में परिभाषित करते हैं। इस परिभाषा का एक फायदा यह है कि यह अधिकांश परिस्थितियों का वर्णन करने लगता है और पहले से पहचाने जाने वाले जैविक प्रकार के पारंपरिक प्रकारों का एक एकीकृत दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

प्रो. भरत राज सिं ने कहा कि पर्यावरण में तेजी से हो रहे परिवर्तन के कारण, मुख्यत कई प्रजातियाँ बड़े पैमाने पर विलुप्त रही है। पाँच अरब से अधिक पृथ्वी पर कभी रहने वाली प्रजातियों की मात्रा मे से 99.9 प्रतिशत से अधिक प्रजातियां का विलुप्त होने का अनुमान है। पृथ्वी की वर्तमान प्रजातियों की संख्या पर अनुमान 10 मिलियन से 14 मिलियन तक है, जिनमें से लगभग 1.2 मिलियन का अभी तक आकड़ा तैयार किया गया है और 86 प्रतिशत से अधिक का अभी तक वर्णित नहीं किया गया है। विश्व के वैज्ञानिकों ने मई 2016 में, इसका आकलन पुनः आकलन किया है कि पृथ्वी पर 1 ट्रिलियन प्रजातियो का अनुमान है परन्तु वर्तमान में केवल एक-हजार में से एक प्रतिशत को ही वर्णित किया गया है। पृथ्वी पर संबंधित डीएनए बेस जोड़े की कुल मात्रा 5.0 इ 1037 है और इसका वजन 50 बिलियन टन है। इसकी तुलना में, जीवमंडल के कुल द्रव्यमान का अनुमान 4 टीटीसी (ट्रिलियन टन कार्बन) जितना है। जुलाई 2016 में, वैज्ञानिकों ने पृथ्वी पर रहने वाले सभी जीवों के लास्ट यूनिवर्सल कॉमन एनस्टर (स्नब।) से 355 जीन के एक सेट की पहचान करने की सूचना दी।

डब्ल्यूएचओ द्वारा जारी किए गए डेटा ने 2016 में पीएम-2.5 के स्तर के मामले में दुनिया के 20 सबसे प्रदूषित लोगों की सूची में शामिल 14 भारतीय शहरों में दिल्ली और वाराणसी को दिखाया। वैश्विक स्वास्थ्य निकाय ने यह भी कहा कि दुनिया में 10 में से नौ लोग सांस लेने वाली वायु जिसमें उच्च स्तर के प्रदूषक होते हैं। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड और राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड देश के 300 शहरों के लिए वायु गुणवत्ता डेटा की निगरानी करते हैं। यह आश्चर्यजनक है कि डब्ल्यूएचओ की रिपोर्ट में केवल 32 शहरों का ही डेटा है। डेटा ने यह भी बताया कि 80 प्रतिशत से अधिक शहरों में सीपीसीबी द्वारा स्थापित राष्ट्रीय परिवेशी वायु गुणवत्ता मानकों (एनएएक्यूएस) से परे प्रदूषण का स्तर था, जो डब्ल्यूएचओ द्वारा वर्णित स्तर से भी बदतर है।